

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,  
JAMMU

No. ६६३-घ

Title स्त्रीरोगचिकित्सा

Author \_\_\_\_\_

Extent १ Age \_\_\_\_\_

Subject आयुर्वेदः अपूर्णम्

नं० ८६३-घ

स्त्रीरोगचिकित्सा (आयुर्वेदः)

नं० ८६३-घ



नं० ६६३-घ  
स्त्रीरोगचिकित्सा (आयुर्वेदः)  
पत्रम् १ (स्कम्) (अपूर्णम्)



वृत्तानागवत्कुण्डलवत्तद्विषयलिङ्गं जातिग  
धारापरिपूरितसर्वसंज्ञकं सचूर्णनवनी  
तैरलिङ्गैर्विषयवत्तैः सचूर्णनवनी  
जिह्वसंज्ञो भवेत् ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशप्रसन्न ॥ अथ स्त्रीरोगचिकित्सा ॥ मधुसैन्धवं संयुक्तं पारं वनमलाञ्जितं ॥  
रामिलिसेन्द्रियेण मांदासीव कुरुते रतौ ॥ एक एव महाभावी मालती संभवोरसः ॥ किं  
पुनस्त्रियसंयुक्तो मधुकर्पूरपारदैः ॥ अथ स्त्रीरोगचिकित्सा ॥ चंदनं तौ परं वालं नेत्रवालं ३  
नागकेसरकं तथा ॥ पीतेन वरिणसंध्यः प्रदरश्चैव नाशयेत् ॥ पुनः ॥ तंडुलं शर्क सितल ४  
रानागंसमं पीतं च वारुणं ॥ प्रदरं नाशयेत् सा शुपथ्यं शालिमसूरकं ॥ पुष्पकं ॥ त्रि  
कटुब्रंशदंडीनां नलिका येन चूर्णकं ॥ पिवेद्भूयांसि पुष्पाणि प्रमदानां भवंति वै ॥  
पुनर्वर्तिका ॥ पिपलीतुं बिकावीजं यवक्षारगुडाञ्जितं ॥ मदनस्य फलं दंती मैत्रफल ५  
स्तुहिक्षीरेण वर्तिका ॥ विधाय स्थापयेद्यो नौ स्त्रीणां पुष्पादिकं भवत् ॥ अथ  
गर्भोत्पत्तित्रिदोषचिकित्सा ॥ शिंशुखशुंगडिंडीरजातिफलविडंगकैः ॥ नागैला  
भिवटीकार्या जलेनैव च शारिका ॥ पयसा भक्षयेद्द्वंध्यायावत्सप्तदिनं भवेत्  
॥ शालिमुग्धधृतक्षीरैर्भक्षयेद्दंतिको निजात् ॥ अन्यत् ॥ दुस्पर्शां शूषणानां  
शर्करासैन्धवं सर्पिष्ठागिक्षीरविषाञ्जितं ॥ युक्त्यानुमर्दयेद्दिग्गंभ सोमनिरचपि पर ९  
वेत्करि करोपमं ॥ १ ॥ लवणसौ सार्पयंतैर्द्वं ता निपुणैः प्रसाधयेत् ॥  
नारिगुणं नदभ्यंगत्सु गंधिसुरतो भवेत् ॥ २ ॥

नेत्रवालं ३  
सितल ४  
मैत्रफल ५  
कचूरु ६



॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

सनातनकमलविष्णुपयसाकारवेददी॥ सानिधायकशरणयो  
नैवध्याविष्णुकिमदिका॥ १॥ इतगरि शिरो जनिताभुप  
सासनादभिरसाय॥ निभुवनभुवनपुगतः सद्यः विनिव  
विनाशाय नि॥ १॥

गनागकेशरकंसिता॥ गोधतेनपिवेत्तारीगर्भमाशुप्रजायते॥ पुनः॥ गोरोचना  
श्वगंधाचनागकेशरकंसिता॥ पीतंदुग्धेनवध्यायांशीघ्रगर्भकरं परं॥ पिवेत्स्त्री  
रजसः प्रांतेगोधतैर्नीगकेशरं॥ तस्याः गर्भभवत्याशुपथ्यंदुग्धोदनं मतं॥ पुनः॥  
लक्ष्मणापयसापीत्वानारीगर्भमवाप्नुयात्स भस्यंतस्यास्तथैवोक्तं मुनिभिर्ग  
र्भकारणं॥ अथगर्भपातनिवारणं॥ लज्जालूधातकीपल्लवीजं च मधुयष्टि  
का॥ पीतंदुल्लोयेनगर्भपातनिवारयेत्॥ इतिप्रसूति॥ अपामार्गशिरवायोनि  
मध्येनिक्षिप्यधारये॥ सुप्रसूयतेनारीभेषजस्यप्रसादतः॥ अन्यत्॥ स्नुहिनीरंस  
मानीयगर्भिरयानखनाभिषु॥ लेपेनकृतमात्रेणसुखनारीप्रसूयते॥ अन्यत्॥ मू  
लंमूडितिकायास्तुसूत्रेण॥ कटिवंधयेत्॥ गर्भशुल्कानिनश्यंतिसुखंनारीप्रसू  
यते॥ अथभगसंकोचनकरणं॥ कविल्लुकं चतुर्वर्तिलोध्रकपूरमाचिका॥ ह  
यमारसाचामाजूलचूकोलजटातथा॥ निक्षिप्यौषधमेतद्विपोनौसंकोच

दीर्घलिं गीर्धिरातिस्थिरमेषुनकारकः॥  
सत्तेववतुभस्त्रीयांनय्यशुरोनपंडितः॥ १॥

गुगुर

मजुकर

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Waidika Bharata Initiative

बडाके जटा

कायकर

काकजं धार

॥ ११ ॥